9. नए प्रश्न नए विचार

महाजनपदों का समय एक बहुत ही रोचक समय था। तब बड़े-बड़े बदलाव आ रहे थे और लोगों के मन में तरह-तरह के सवाल उठने लगे थे। इन सवालों के कुछ उदाहरण तो तुमने पिछले पाठों में पढ़े थे। राजा पुरुजित सोच रहा था, "यज्ञ क्यों करना चाहिए?" श्रावस्ती में रंगू बासंती से पूछ रहा था, "दुख कैसे दूर किया जा सकता है?" तुम इस पाठ के उपशीर्षकों को पढ़ो तो पता लगेगा कि और किस-किस तरह के सवाल उन दिनों लोग पूछते थे।

क्या तुम्हारे मन में भी ऐसे प्रश्न उठते हैं? तुम इन प्रश्नों के बारे में क्या सोचते हो – चर्चा करो।

मरने के बाद क्या होता है?

तुम्हारी ही उम्र के नचिकेत नाम के एक बालक की कहानी बहुत प्रसिद्ध है। शायद तुमने भी सुनी होगी। नचिकेत के मन में सवाल उठा, 'मरने के बाद हमारा क्या होता है?' उसने सोचा कि यमराज तो मृत्यु का देवता है। उसी से पता करना चाहिए। नचिकेत सीधे यमराज के पास गया उन से प्रश्न पूछने! ज्ञान पाने की इच्छा में वह बालक उस भयानक देवता से डरना भी भूल गया! नचिकेत ने यमराज से पूछा, "मरने के बाद हमारा क्या होता है?"

यमराज इस कठिन प्रश्न का उत्तर नहीं समझाना चाहता था। यमराज ने उसके प्रश्न को टालने की लाख कोशिश की। उसे खूब लालच दिया, कि "तुझे सोना दूंगा, चांदी दूंगा, गायें दूंगा। मगर तू ये प्रश्न न पूछ। इसका उत्तर तो देवता भी नहीं जानते हैं।" मगर नचिकेत अड़ा रहा और यमराज से उत्तर जानकर ही छोड़ा। नचिकेत की यह कहानी उन दिनों रचे गये **ग्रंथ** 'कठोपनिषद' में लिखी है।

तुम्हें क्या लगता है, मरने के बाद क्या होता होगा कक्षा में चर्चा करो।

ऐसा क्या है जो कभी नहीं मरेगा?

उन दिनों कई लोग जंगलों में **आश्रम** बनाकर रहते थे। उन आश्रमों में वे तरह-तरह के प्रश्नों पर **चिंतन-मनन** करते थे। वहाँ आने वालों से वे चर्चा

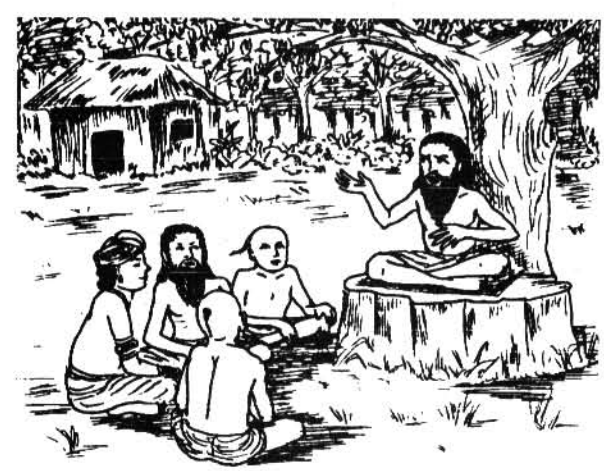

करते थे और अपने विचार दूसरों को सिखाते थे। इस तरह आश्रमों में रहने वाले **ऋषि-मुनि** कहलाते थे। कई राजा भी इस तरह के चिंतन मे आगे थे। इन राजाओं व ऋषियों के विचारों को **उपनिषद्** नाम की पुस्तकों में पढ़ा जा सकता है। याज्ञवल्क्य, आरुणि आदि बहुत जाने माने ऋषि थे।

इन ऋषियों को ऐसी चीज़ की खोज थी जो कभी नहीं मरे और कभी दुखी न हो। उन्होंने ऐसी कभी नष्ट न होने वाली चीज़ को "आत्मा" या "ब्रह्म" कहा। वे यह भी मानते थे कि आत्मा या ब्रह्म को ठीक से जानने पर ही हम अमर हो सकते हैं। आत्मा को जानने के लिए तपस्या करनी ज़रूरी है।

तुमने आत्मा और तपस्या के बारे में क्या-क्या सुना है – बताओ।

परिव्राजक

कुछ और ज्ञान खोजने वाले लोग थे जो एक जगह नहीं रहते थे। वे घर-बार **त्यागकर** गांव-गांव, जंगल-जंगल, शहर-शहर घूमते रहते थे। इन्हें **परिव्राजक** (यानी घूमने वाले) या **भिक्षु** (यानी भीख मांग कर खाने वाले) कहा जाता था। ऐसे परिव्राजकों में वर्धमान महावीर, गौतम बुद्ध, मक्खली गौशाल और अजित केशकंबलिन बहुत प्रसिद्ध हुए।

संसार के झंझट से कैसे छुटकारा पायें? (वर्धमान महावीर)

वर्धमान महावीर एक गणसंघ में जन्मे थे। तीस वर्ष की उम्र में वे अपने घर परिवार को छोड़कर परिव्राजक बन गये। उनके मन में यह प्रश्न था "संसार के जन्म और मरण के झंझट से हम कैसे बच सकते हैं?" कई वर्ष चिंतन और घोर तपस्या के बाद महावीर को अपने प्रश्नों का उत्तर सूझा।

महावीर ने लोगों को यह शिक्षा दी कि हम दूसरे जीवों को जो दुख पहुंचाते हैं, इससे हम पर **पाप** का बोझ होता है। इसलिए जहां तक संभव हो किसी प्रकार के प्राणी को चाहे वह छोटे से छोटा कीड़ा क्यों न हो, दुख नहीं पहुंचाना चाहिये, और हिंसा नहीं करनी चाहिये। अपने पुराने पापों के बोझ को उतारने के लिए हमें अपने शरीर को कष्ट देकर घोर तपस्या करनी चाहिये। इस तरह हम पाप का बोझ हटा सकते हैं और इस संसार से छुटकारा पा सकते हैं।

महावीर हमेशा घूमते रहे और लोगों को अपने विचार समझाते रहे। कई लोग उनकी बातों को मानने लगे। इस प्रकार **जैन मत** की शुरुआत हुई।

दुख क्यों होता है? दुख से छुटकारा कैसे मिलेगा? (गौतम बुद्ध)

गौतम बुद्ध भी महावीर की तरह एक गणसंघ में पैदा हुए थे। उन्होंने पाया कि चारों ओर लोग दुखी हैं और एक दूसरे से लड़ रहे हैं। वे सोचने लगे, "इस दुख से छुटकारा कैसे पा सकते हैं?"

ऐसे प्रश्नों के उत्तर खोजने गौतम भी अपना घर परिवार छोड़कर एक परिव्राजक बन गये। कई वर्ष चिंतन करने के बाद उन्हें अपने सवालों का उत्तर सूझा।

गौतम बुद्ध का कहना था कि बहुत अधिक इच्छा के कारण ही दुख होता है। अगर हम अपनी इच्छाओं को काबू में कर सकते हैं तो दुख से भी

गौतम बुद्ध

छुटकारा पा सकते हैं। इच्छाओं पर काबू पाने के लिए हमें **संयम** से रहना चाहिये और दूसरों को भी दुख नहीं पहुंचाना चाहिए। इस तरह बुद्ध ने जो विचार फैलाया वह **बौद्ध मत** कहलाया।

रिक्त स्थानों को भरो-

——— आश्रम बनाकर रहते थे जबकि ——— घूमते रहते थे।

याज्ञवल्क्य जैसे ऋषियों के विचार ——— नाम की पुस्तकों में लिखे हैं।

वर्धमान महावीर द्वारा चलाया गया मत ——— मत के नाम से प्रसिद्ध है, जबकि गौतम बुद्ध द्वारा चलाया गया मत ——— मत के नाम से जाना जाता है।

नचिकेत किस प्रश्न का उत्तर जानना चाहता था?

ऋषियों को किस चीज़ की खोज थी?

महावीर ने क्यों कहा कि हमें किसी जीव को कष्ट नहीं पहुंचाना चाहिए?

बुद्ध ने दुख से बचने का क्या उपाय बताया?

तुम ने भी कई घूमते रहने वाले साधू महात्माओं को देखा होगा। वे क्या करते हैं और क्या कहते हैं, कक्षा में चर्चा करो।

तुम्हारे घर के लोग ऐसे साधु महात्माओं से क्या पूछते हैं? पता करो।

बुद्ध और महावीर जैसे कई और परिव्राजक हुये जो अपने-अपने मतों का प्रचार करते थे। उन दिनो राजाओं से लेकर मज़दूरों तक सब तरह के लोग इन परिव्राजकों से अपने प्रश्न पूछते थे और चर्चा करते थे। वे क्या पूछते थे और क्या चर्चाएं होती थीं चलो एक कहानी में पढ़ें।

कहानी - कौतूहल शाला

श्रावस्ती नगर के बाहर घने पेड़ों से घिरा एक उपवन था। यहां पेड़ों के नीचे चबूतरे और कमरे बने थे। यह थी श्रावस्ती नगर की "कौतूहल शाला" (यानी लोगों के **कौतूहल** को शांत करने की जगह) यहां तरह-तरह के विचार के लोग - पंडित, ऋषि और भिक्षु आकर अपने विचार सुनाते थे। शहर के लोग आकर उन्हें सुनते थे और उनसे प्रश्न पूछते थे।

क्या यज्ञ करना चाहिये?

एक दिन रंगू और बासंती कौतूहल शाला गये। वहां जगह-जगह चर्चाएं चल रहीं थीं। एक पेड़ के नीचे एक राजकुमार एक ऋषि से पूछ रहा था कि क्या यज्ञ करना चाहिए? ऋषि राजकुमार को समझा रहे थे -

"यज्ञ तो करना चाहिये। उसमें सैकड़ों जानवरों की बलि भी देनी चाहिए। उससे **पुण्य** मिलेगा और तुम स्वर्ग में जाओगे। मगर जब यह पुण्य स्वर्ग में खप जायेगा तो तुम वापस यहीं

जन्म लोगे। यज्ञों से मिले पुण्य खत्म हो जाते हैं।"

राजकुमार, "तो क्या करना चाहिये?"

ऋषि, "उपनिषदों में कहा है कि वे मूर्ख हैं जो यज्ञों को ही सब कुछ मानते हैं। तुम्हें तपस्या करके अपनी आत्मा का ज्ञान पाना चाहिये।"

राजकुमार, "क्या मुझे अपना राजकाज छोड़कर तपस्या करनी चाहिये?"

तब वहां खड़े एक परिव्राजक ज़ोर से बोल उठे, "मैं इस ऋषि की बात नहीं मानता। आत्मा नाम की कोई चीज़ नहीं है। मरने पर हमारा शरीर तो मिट्टी में मिल जाता है। उसके बाद कुछ नहीं बचता है। इसलिए जब तक हम ज़िंदा हैं खूब खा-पीकर सुख से जीना चाहिए। तपस्या और पाप-पुण्य के झंझट में नहीं पड़ना चाहिए।"

रंगू को यह बात बहुत मज़ेदार लगी। बासंती भी सोचने लगी कि हम जब मर जाते हैं उसके बाद क्या सचमुच कुछ बचता है?

ऋषि के विचार में इनमें से कौन-कौन सी बातें सही होंगी।

1. यज्ञ करना चाहिए 2. यज्ञ नहीं करना चाहिए 3. यज्ञ से पुण्य मिलेगा 4. यज्ञ में पशुओं की बलि नहीं होनी चाहिए 5. यज्ञ से मिला पुण्य खत्म हो जायेगा 6. आत्मा का ज्ञान पाना ही सबसे बड़ी बात है

परिव्राजक को इनमें से क्या बातें ठीक लगती ?

1. यज्ञ करने से कोई पुण्य नहीं मिलेगा।

2. आत्मा जैसी कोई चीज़ नहीं है।

3. जब तक जीवित हो सुख से जियो।

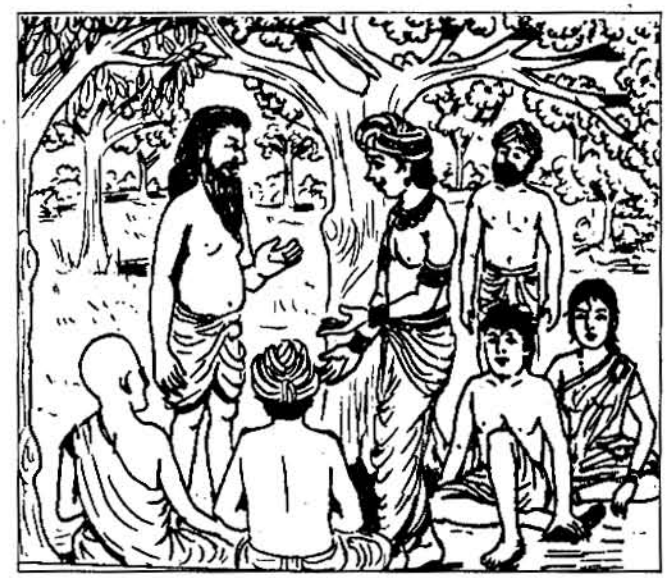

"तपस्या करो - ज्ञान प्राप्त करो"

सच्चा यज्ञ क्या है?

रंगू और बासंती कुछ देर बाद एक दूसरे पेड़ के नीचे पहुंचे। वहां सिर मुंडाये एक भिक्षु बैठे थे। वही राजकुमार उनसे पूछ रहा था–

"हे भिक्षु मैं यज्ञ करना चाहता हूं। कोई कहता है कि यज्ञ करने से पुण्य मिलेगा। कोई और कहता है, पाप पुण्य कुछ नहीं होता। आपका क्या विचार है? क्या यज्ञ करना चाहिये? सच्चा यज्ञ कैसा हो?"

भिक्षु बोले, "हे राजकुमार यज्ञ में सैकड़ों जानवरों को दुख पहुंचाकर उनकी बलि देते हो। किसानों से जानवर और अनाज लेकर उन्हें दुख पहुंचाते हो। दूसरों को दुख पहुंचाने और हिंसा करने से पुण्य कैसे मिलेगा?

"तुम्हारी प्रजा में कितने लोगों के पास काम धंधा नहीं है। कितने लोग भूखे हैं और दुखी हैं। तुम सबसे पहले उन लोगों के लिए काम धंधों

का इंतज़ाम करो। किसी से यज्ञ के लिए ज़बरदस्ती बलि मत लो। जो मिले उसे भी लोगों में बांट दो। बेकारी, ग़रीबी और दुख दूर करना ही सच्चा यज्ञ है राजकुमार! इसी से तुम्हें पुण्य मिलेगा और तुम सुखी होगे।"

रंगू और बासंती को भिक्षु की यह बात अच्छी लगी। बासंती बोली, "अगर सारे राजा ऐसे करें तो कितना अच्छा होगा।"

भिक्षु ने राजा से क्या करने को कहा? और क्या करने को मना किया?

क्या अच्छे काम के फल अच्छे होंगे?

एक और भिक्षु पेड़ के पास खड़ा था। वह राजा से बोला, "अरे तुम्हारे करने या न करने से कुछ फर्क नहीं पड़ता है। जो तुम्हारे भाग्य में है वही होगा। न तुम अच्छे कामों से अपना सुख बढ़ा सकते हो न ही बुरे कामों से तुम्हारा कुछ बिगड़ेगा। जो होनी में है सो तो होगा ही।"

इस तरह कई अलग-अलग विचार सुनकर राजा कौतूहल शाला से लौट गया।

तुम्हें क्या लगता है – राजा ने कौन सा विचार माना होगा और क्या किया होगा? कक्षा में चर्चा करो।

क्या दूसरे भिक्षु की बात तुम्हें ठीक लगी –

क्या वास्तव में बुरे काम या अच्छे काम से कोई अंतर नहीं पड़ता है? तुम अपने आसपास के उदाहरणों को ध्यान में रखकर चर्चा करो।

क्या जन्म से कोई ऊंचा और कोई नीचा होता है?

रंगू और बासंती अब अपने घर की ओर चल पड़े। कौतूहल शाला में इतनी तरह की बातें सुनकर वे सोच में डूबे हुए थे। घर के रास्ते में उन्हें एक दोस्त मिल गया। उसने बताया कि वह गौतम बुद्ध से मिलने जा रहा है। उसने रंगू और बासंती को भी साथ आने को कहा। "बस यहीं पास में जेतवन में बुद्ध ठहरे हैं। उनकी बातों को सुनकर तुम्हें अच्छा लगेगा।"

रंगू और बासंती जेतवन पहुंचे तो वहां का शांत **वातावरण** उन्हें पसंद आया। एक जगह बुद्ध बैठे थे और उनके चारों तरफ कई लोग बैठे थे। उनमें कई ब्राह्मण भी थे। रंगू और बासंती भी एक ओर बैठ गये।

एक ब्राह्मण युवक बोलने लगा, "हे बुद्ध, मैं श्रावस्ती नगर का आश्वलायन हूं। हे बुद्ध, हमने सुना है कि आप कहते हैं कि ब्राह्मण, क्षत्रिय,

वैश्य और शूद्र सब जातियां समान हैं। मगर हमारे पूर्वजों ने कहा है कि ब्राह्मण ही सबसे ऊंचे हैं क्योंकि वे भगवान के मुंह से पैदा हुये हैं।"

बुद्ध बोले, "मगर हे आश्वलायन, बच्चे अपनी माँ के पेट से जन्म लेते हैं, चाहे जो भी जाति के हों। तो यह कहना ठीक नहीं होगा कि ब्राह्मण भगवान के मुंह से पैदा हुये हैं।"

आश्वलायन, "हे बुद्ध, हमने सुना है कि आपके **अनुसार** कोई भी जाति के मनुष्य को **मोक्ष** मिल सकता है। ब्राह्मण तो यह मानते हैं कि वे सबसे ऊंचे हैं और उनको ही मोक्ष मिल सकता है। इसके बारे में आपको क्या कहना है?"

बुद्ध, "हे आश्वलायन, अगर कोई ब्राह्मण चोरी करे या हत्या करे, क्या उसे पाप नहीं लगेगा – क्या वह नरक नहीं जायेगा?"

आश्वलायन, "हां हे बुद्ध, चोरी या हत्या करने वाला चाहे वह ब्राह्मण हो या शूद्र वह नरक में ज़रूर जायेगा।"

बुद्ध, "अगर कोई शूद्र, कोई पाप न करे और अच्छे आचरण करे तो क्या वह स्वर्ग नहीं जायेगा?"

आश्वलायन, "हां बुद्ध, अच्छे आचरण करने वाला, चाहे वह किसी भी जाति का हो - स्वर्ग जायेगा।"

बुद्ध, "हे आश्वलायन तो जन्म महत्व का नहीं है। आचरण ही महत्वपूर्ण है। सभी लोग अच्छे आचरण से मोक्ष पा सकते हैं।'

रंगू और बासंती को ये बातें बहुत अच्छी लगीं।

फिर वे जेतवन में और लोगों से भी मिले। कई लोग अपने घर बार छोड़कर बुद्ध के शिष्य बन गये थे। इन्हें बौद्ध भिक्षु कहा जाता था। बौद्ध भिक्षुओं का एक **संगठन** था जो **बौद्ध संघ** कहलाता था। संघ में कोई ऊंचा या नीचा नहीं माना जाता था। हर भिक्षु को, चाहे वह संघ में आने से पहले ब्राह्मण रहा हो या शूद्र, समान अधिकार मिला हुआ था। बौद्ध संघ में औरतें भी थीं – और सब मिलजुल कर सारे काम करते थे।

बुद्ध और आश्वलायन किस बात पर चर्चा कर रहे थे?

वाक्य पूरा करो-

- ***आश्वलायन का कहना था कि ब्राह्मण सबसे ऊंचे हैं क्योंकि -***
- ***बुद्ध का कहना था कि जिसका - — अच्छा है उसी को - —— मिलता है।***

अभ्यास के प्रश्न

1. छोटे जनपदों के समय तक यज्ञों को बहुत महत्व दिया जाता था। पर बाद में ऋषि-मुनियों और भिक्षुओं ने किन बातों को ज़्यादा महत्व दिया? सिर्फ पांच वाक्यों में लिखो।
2. वर्धमान महावीर के अनुसार हिंसा करने और दूसरों को दुख पहुंचाने से हम पर क्या असर पड़ता है?
3. क) गौतम बुद्ध के अनुसार हम अपना दुख कैसे कम कर सकते हैं?
   ख) क्या उस समय ऐसे परिव्राजक थे जो तपस्या करने, संयम रखने जैसी बातों को नहीं मानते थे? वे दुख-सुख के बारे में क्या सोचते थे?
4. बुद्ध ने यह बात सिद्ध करने के लिए क्या तर्क दिए कि ब्राह्मण जन्म से सबसे ऊंचे नहीं हैं?
5. यह किसने कहा कि इच्छाओं पर काबू रखने से हम दुख कम कर सकते हैं?
   इस प्रश्न का उत्तर पाठ के किस उपशीर्षक में मिलेगा?
6. इन शब्दों को अपने वाक्यों में उपयोग करो -
   अनुसार , त्याग, कौतूहल, आचरण।